semblance. II. Adj. : expr. by verb : v. Also apparent (III).

SEEMINGLY : (1) प्रकटम् : v. Openly ; (2) बहिस् (n.) : v. Externally.

SEEMLINESS : (1) उपयुक्तता : v. Propriety : (2) विनीतता : v. Decency.

SEEMLY : (1) उपयुक्त (f. क्ता) : v. Suitable, proper ; (2) विनीत (f. ता) : v. Decent. *To be s.* : युज्यते, उप-, (pass. of युज् : with loc.), Ku.

SEER : I. Lit. : (1) द्रष्टृ (f. ष्ट्री) ; (2) दर्शक (f. र्शिका) ; (3) दर्शिन् (f. नी). II. A prophet : q.v. : सिद्ध (f. द्धा).

SEETHE : क्वथति *or* क्वाथयति (क्वथ्, c. 1. and c. 10. : lit, and fig.).

SEGMENT : (1) धनुःक्षेत्रम् *or* चापक्षेत्रम्, K.d. (of a circle) ; (2) खण्डम् (in gen.) N.B. S.s of the base of a triangle made by the perpendicular from the opposite angle : आबाधे *or* अवबाधे, Li. 137., in an obtuse a.ed t. ऋणाबाधे, Li. 140.

SEGREGATE : (1) वियोजयति (युज्, c. 10.) ; (2) विश्लेषयति (c. of श्लिष्) : v. To separate.

SEGREGATION : विश्लेषः : v. Separation.

SEIGNEURIAL, SEIGNIORIAL : expr. by gen. or comp.

SEIGNIOR : (1) स्वामिन् (m.) ; (2) प्रभुः : v. Lord.

SEIGNIORAGE : करविशेषः.

SEIZABLE : (1) ग्राह्य (f. ह्या) ; (2) ग्रहणीय (f. या) ; (3) धार्य (f. र्या).

SEIZE : I. To catch : q.v. : गृह्णाति (ग्रह्, c. 9.), *to s. me* : ग्रहणे मम, Mah. vii. 73. 1. ; *s.s by the hair* : केशैर्गृह्णाति, P. II. To take possession of : गृह्णाति, *your house has been s.d by another alligator* : त्वदीयं गृहमपरेण मकरेण गृहीतम्, P. iv. 9. : v. Also to enter. III. To invade, attack : q.v. : आक्रामति (क्रम्, c. 1.) : v. Also to possess. IV. To apprehend : गृह्णाति, प्र-, *to s. on suspicion* : शङ्कया गृह्णाति, Y. : v. To arrest.

SEIZER : (1) ग्राहक (f. हिका), Y. ; (2) ग्रहीतृ (f. त्री).

SEIZURE : (1) ग्रहणम् (rarely ग्रहः) ; (2) धारणम् (=catching).

SELDOM : (1) कचित् ; (2) कदाचित् ; (3) कर्हिचित् (rare).

SELECT (v.) : वृणीते (c. 9.) : v. To choose ; (2) आहरति (हृ, c. 1.=to pick out).

SELECT (adj.) : (1) वृत (f. ता : ?) ; (2) विशिष्ट (f. ष्टा=choice).

SELECTION : no proper equiv. : expr. by verb. *Easy s.* : सहजसंग्रहः (?) ; *choice s.* : उत्कृष्टसमाहारः (?) ; etc.

SELENITE : चन्द्रकान्तः (?), -उपलः ; *चन्द्रप्रभः.

SELF : (1) आत्मन् (m.), *s.-born* : आत्मभूः (n. भु); *s. -destroyer* : आत्मघातिन् (f. नी) ; *s. -interest* : आत्महितम् ; *good for s.* : आत्मनीन (f. ना) : v. Also myself, himself, etc. ; (2) स्वयम् (=I myself, you yourself, etc.).

SELFISH : (1) स्वार्थपर (f. रा) ; (2) स्वार्थपरायण (f. णा) ; (3) स्वार्थनिष्ठ (f. ष्ठा) ; (4) by verb, *every one is s.* : सर्वः स्वार्थं समीहते, Si. ii. 65.

SELFISHLY : expr. by adj. or verb.

SELFISHNESS : (1) स्वार्थपरता ; (2) स्वार्थपरायणता ; (3) स्वार्थनिष्ठा ; etc.

SELL (v.t.) : (1) विक्रीणीते (क्री, c. 9.), *s.ing it to others* : विक्रीणानस्तदन्यत्र, N.s. ; *Oh.*, (*you*) *attempted to s. us like meat* : प्रारब्धा मांसवद्हो विक्रेतुमेते वयम्, Mu. v. 21. ; (2) विक्रयं करोति : *I will very mercilessly s. you* : करोम्येष विक्रयं ते सुनिर्घृणः, D. b. vii. 22-1.

SELL (v.i.) : (मूल्यं) लभते, *if 8 silk clothes s. for 100 (rupees)* : पट्टसूत्रपटिका अष्टौ लभन्ते शतम्, Li. 55. ; (*my*) *friend, at what price will fourteen s.* : चतुर्दश सखे मूल्यं लभन्ते कियत्, Li. 56.

SELLER : (1) विक्रेतृ (f. त्री), *it is to be returned to the s.* : विक्रेतुः प्रतिदेयं तत्, N.s. ; *s. of self (a slave)* : आत्मविक्रेता, Mit. ; (2) विक्रयिन् (f. णी), *shame on this s. of honour* : धिङ् मानविक्रयिणमिमम् K.s. 43. 85. ; (3) विक्रयिक (f. की) ; (4) विक्रयकारिन् (f. णी).

SELLING (subs.) : विक्रयः : v. Sale, to sell.

SELVA(ED)GE : (1) दशा ; (2) वस्तिः ; (3) तरी.

SEMBLANCE : (1) आभा ; (2) आभासः ; (3) अवभासः : v. Also appearance (IV), likeness.